इकाई –14– 1857 का विद्रोह : विचारधारा, कारण एवं विद्रोह की कार्य योजना एवं स्वरूप

Revolt of 1857 : Ideology, causes, programmes and nature

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14..2 1857 के विद्रोह की वैचारिक पृष्ठभूमि

14.3 1857 के विद्रोह के कारण

14.3.1 राजनैतिक कारण

14.3.2 सामाजिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों में हस्तक्षेप

14.3.3 सांस्कृतिक कारण

14.3.4 आर्थिक कारण

14.3.5 समाचार पत्रों का प्रकाशन

14.3.6 सैनिक कारण

14.3.7 तात्कालिक कारण : चर्बी वाले कारतूस

14.4 1857 के विद्रोह की कार्ययोजना एवं स्वरूप

14.4.1 विद्रोह का प्रारंभ एवं प्रसार

14.4.2 विद्रोह के क्षेत्र

14.4.3 विद्रोह स्वरूप एवं उसकी व्याख्या

14.5 सारांश

14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

14.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

14.0 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. विद्यार्थियों को 1857 के विद्रोह की वैचारिक पृष्ठभूमि क्या थी उससे अवगत कराना है।
2. 1857 का विद्रोह किन मूल व तात्कालिक कारणों से हुआ उनकी विवेचना करना।
3. 1857 के विद्रोह के लिये क्या–क्या कार्य योजना बनाई गई उनको प्रस्तुत करना।
4. 1857 के विद्रोह के स्वरूप के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों ने अपने विचार व्यक्त किये उनका विश्लेषण प्रस्तुत करना।
5. 1857 के विद्रोह के परिणाम से अवगत कराना है।

14.1 प्रस्तावना :

सन् 1757 ई. के प्लासी के युद्ध के पश्चात् भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुई इसके सौ वर्ष बाद सन् 1857 ई. तक ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य विस्तार करना अर्थात् इसे आर्थिक शोषण याने कि विजय, विलय और शोषण का इतिहास कह सकते हैं। डलहौजी का 'व्यपगत सिद्धांत', राज्यों के हड़पने की नीति, सहायक संधियों, सैनिक वर्ग को समुद्र पार भेजना, चर्बी वाले कारतूस का उपयोग, मूंछ ललाट बनाना, अप्रत्यक्ष रूप से भारतीयों के धर्म पर आघात करना, भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों जैसे– सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, शिशु हत्या आदि पर प्रतिबंध लगाकर हस्तक्षेप करना, अर्थव्यवस्था के मामले में दखल देना सबसे बड़ा अभिशाप था, आर्थिक शोषण करके ही अंग्रेज भारत का धन इंग्लैंड ले जाते थे। इन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के राजनैतिक शक्ति के प्रयोग से भारतीय हस्तशिल्प और व्यापार, सूती वस्त्रों का सर्वनाश कर दिया, नवीन कर व्यवस्था, लागू करके धन के दोहन का कार्य चलता रहा, अंग्रेजों ने धार्मिक मामले में भी हस्तक्षेप करके ईसाई धर्म को ही सर्वोपरि माना और इसी का प्रचार–प्रसार हेतु अधिक से अधिक लोगों को ईसाई बनाया। इन सभी कारणों से चारों ओर असंतोष व्याप्त हो रहा था और सन् 1857 ईस्वी के आते ही विद्रोह का शंखनाद हो गया। सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह की विचारधारा, कारण, कार्य योजना एवं स्वरूप की विस्तृत विवेचना इस इकाई में की जावेगी ।

14.2 1857 के विद्रोह की वैचारिक पृष्ठभूमि :

सन् 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुई थी। इसके सौ वर्षों बाद 1857 ईस्वी तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना अधिकार धीरे–धीरे व्यापार के माध्यम से

शुरू किया किन्तु भारतीयों के आपस के झगड़ों का लाभ उठाकर मुट्ठी भर अंग्रेजों ने एक खुशहाल और समृद्धशाली देश को गुलामी से जकड़ लिया इन्होंने भारत पर विजय किसी वीरता या युद्ध कौशल के बलबूते पर नहीं की बल्कि कूटनीतिज्ञ और विश्वासघात से हासिल की थी। ये भारत का दुर्भाग्य ही कह सकते हैं कि यहाँ कि जनता ने आपस में लड़–झगड़कर बाहरी लोगों के हाथों अपने साम्राज्य की बागडोर सौंप दी।

अंग्रेजों की संपूर्ण कार्य व्यवस्था जो कि व्यापार से शुरू हुई थी धीरे–धीरे पूरे भारत वर्ष को हड़पने की कोशिश में बदलने लगी थी, अंग्रेजों का विचार प्रारंभ में तो इस देश में व्यापार बढ़ाने का था किंतु भारतीयों के मनमस्तिष्क को पढ़ने के बाद उनकी विचारधारा बदलने लगी और वे साम्राज्य विस्तार, धनलोलुपता के अधीन होकर भारतीयों पर अत्याचार करने लगे, भारतीय देशी रियासतों का स्वच्छंद एवं उन्मुक्त रूप से कार्य करने और अपनी–अपनी व्यवस्था से चलने एवं एकजुटता ना हो पाने के कारण अंग्रेजों ने इस कमजोरी का भरपूर फायदा उठाकर आपस में एक दूसरे के विरूद्ध लड़वाया, एक रियासत का दूसरी रियासत पर कब्जा किया, एक के बाद एक पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को अपने मकड़जाल में फंसा लिया तथा व्यापारिक दृष्टिकोण लेकर आये ये लोग इस देश तथा इसके आसपास के देशों के सरपरस्त (मसीहा) बन गये।

क्रूरता और अन्याय की हर सीमा को पारकर करके इन्होंने ये साबित कर दिया कि ये मुसलमान शासक गजनबी, तैमूर लंग, नादिरशाह, चंगेज खां से किसी भी तरह कम नहीं हैं। अपने झूठे वादों, संधि–पत्रों के द्वारा इन्होंने रियासतों और राजा–महाराजाओं को पंगु बनाकर उन्हें उनके राज्य से बेदखल कर दिया।

इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा अनुचित व्यवहार की अनेक मिसालें दी जा सकती हैं। सन् 1857 ईस्वी की क्रांति की सही स्थिति समझने की कोशिश की जाये तो ये लगता है कि ये अचानक या कोई तात्कालिक कारण के वजह से होने वाली घटना नहीं है बल्कि इसके होने के पीछे उस समय की परिस्थिति एवं बहुत से कारण जिम्मेदार हैं जो अंग्रेजों द्वारा निर्मित किये गये थे। अंग्रेजों का भारतीय के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करना, उन्हें हेय दृष्टि से देखना, जिस देश में वो लाखों करोड़ों का राजस्व कमा रहे हैं, उसी देश के नागरिकों को धीरे–धीरे पतन की ओर ले जाना, दिल्ली सम्राट बहादुर शाह के साथ अनुचित व्यवहार, इनके विरूद्ध साजिशें, इनकी संपत्तियों पर कब्जा,

डलहौजी द्वारा बहुत सी रियासतों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय, पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहेब की पेंशन बंद करा दी, जिसकी सुनवाई तक नहीं हुई, ये अन्याय असहनीय था, इसके बाद भी देश की जनता को मिशनरी से जोड़कर, उन्हें ईसाई बनाना, ईसाईयत का प्रचार–प्रसार किया गया। देश के अधिकांश लोगों में ये सोच पनप रही थी कि यहाँ के निवासियों, उनके मलिक व शासकों कोई अंग्रेजी अधिकार प्राप्त नहीं थे, उन्हें अपमान व घृणा ही मिल रही थी, जिससे उनकी संस्कृति व अपनी पहचान दोनों पर आघात पहुँचा, धर्म असुरक्षित था, अपने ही देश में हम गुलाम बने थे, कानून व न्यायपालिका में देश का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई भारतीय नेता मौजूद नहीं था। जिससे कि नागरिक हित प्रभावित हो रहे थे। उसी समय सैनिकों को चर्बीयुक्त कारतूसों के उपयोग के लिये विवश करना और सैनिकों में असंतोष व्याप्त होना ही उस परिस्थिति में यही विद्रोह का तात्कालिक कारण बन गया ये कुछ हद तक सही भी है किंतु इसने पहले से एकत्रित बारूद के ढेर में चिंगारी लगाने का कार्य किया था।

भारत से अंग्रेजों को हटाने प्रयास सालों से किये जा रहे थे, देश के अंदर हर श्रेणी के लोगों में जबरदस्त विस्फोटक सामग्री जमा हो गई थी, इसे केवल सुयोग्य नेतृत्व की आवश्यकता थी, जो इस सामग्री से लाभ उठाकर सारे देश को स्वाधीनता के एक महान संग्राम के लिये तैयार कर सके और सौ साल से जमे हुये विदेशी शासन को उखाड़ फेंक सके एवं कोई अकस्मात् चिंगारी इस मसले पर पड़कर देश में भयंकर आग लगा दे नतीजा फिर चाहे कुछ भी क्यों न हो और ऐसा हुआ एवं चर्बी वाले कारतूस इसका माध्यम बने।

सन् 1857 ई. का विद्रोह वास्तव में भारत में हिन्दू और मुसलमान नरेशों और भारतीय जनता दोनों की ओर से देश के विदेशियों को, राजनैतिक अधीनता से मुक्त कराने की एक जबरदस्त और व्यापक प्रयास था।

इस प्रकार इन कारणों का आंकलन करने पर पाया गया कि सन् 1857 ई. की क्रांति का अभ्युद्ध होना वाजिब था, ये एक ऐसा युद्ध था जिसमें लोग अपने धर्म, अपनी कौम पर हुये अत्याचारों का बदला लेने व अपनी दबी हुई भावनाओं को जाग्रत करने के लिये उठ खड़े हुये। इस राष्ट्रीय प्रयत्न की तह में एक उतनी ही गहरी योजना और उनका व्यापक, गुप्त संगठन छुपा हुआ था

जिसके लिये उन्होंने एकजुट होकर प्रयत्न किये। इस विशाल योजना का सूत्रपात दोनों में से किसी एक स्थान पर हुआ। कानपुर के निकट विठूर में या बिट्रेन की राजधानी लंदन में। इस तरह विद्रोह में अनेक लोगों द्वारा अलग–अलग रूप से प्रयास चालू कर दिये गये थे जिससे कि देश में ही नहीं विदेशी शक्तियाँ जो अंग्रेजों के विरूद्ध थी उनको भी इस विद्रोह में सहयोगी बनने का अवसर मिला ।

अंततः बैरकपुर छावनी में इस क्रांति का श्रीगणेश हुआ जब वहाँ के भारतीय सैनिकों को चर्बीयुक्त कारतूस का जबरदस्ती प्रयोग करने व उनके धर्मनष्ट करने की कोशिश की गई, मंगल पांडे नामक सैनिक इसका विरोध करते हुये, विद्रोह कर दिया और 1857 की क्रांति का शंखनाद हुआ।

14.3 1857 के विद्रोह के कारण :

स्वधर्म एवं स्वराज्य, इन दो महान लक्ष्यों को उद्देश्य बनाकर सन् 1857 ईस्वी में प्रारंभ हुये रणयुद्ध का निश्चय डलहौजी के कार्यकाल में लिया गया था। किंतु भारतीयों की जन्मजात स्वतंत्रता को छीनकर उसके बदले गुलामी और स्वधर्म के स्थान पर ईसाइयत लादने का पतित विचार जब पहले–पहल अंग्रेजों व्यापारियों के मन में आया तभी से हिन्दुओं के मन मस्तिष्क में क्रांति का संचार प्रारंभ हो गया। सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह का कारण अंग्रेजों के "अच्छे शासन" या "बुरे शासन" में न होकर केवल और केवल उनके "शासन" करने में था।

भारत में अंग्रेजों ने राज्य विस्तार का कार्य ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से किया था जिसका उद्देश्य साम्राज्य बढ़ाना और व्यापारिक शोषण था। अंग्रेजों की धन संचय की प्रकृति की कोई सीमा नहीं थी एवं इस समस्त शोषण नीति के संचित प्रभाव से भारत में सभी वर्गों, रियासतों के राजाओं, सैनिकों, जमींदारों, कृषकों, व्यापारियों, ब्राह्मणों तथा मौलवियों केवल नगरों में पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त वर्ग जो अपनी जीविका के लिये कंपनी पर निर्भर थे, उनको छोड़कर शेष सभी पर प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट दिखने लगा था।

1857 ईस्वी के विद्रोह के कारण अधिक गूढ़ थे, भारतीयों का रोष समय–समय पर भारत के विभिन्न भागों में सैनिक विद्रोहों अथवा परिद्रोहों के रूप में प्रकट होता रहा जैसे कि 1806 में बैल्लोर, 1824 में बैरकपुर, फरवरी 1842 ई. में फिरोजपुर, 34 वीं रेजीमेंट का विद्रोह, 1849 ई. में सातवीं

बंगाल कैवलरी और 64 वीं रेजीमेंट व 22 वीं एन.आई. का विद्रोह और 1852 ई. में 38 वीं एन.आई. का विद्रोह इत्यादि इसी तरह 1816 में बरेली में उपद्रव हुये, 1831–33 का कोल विद्रोह 1848 में कांगड़ा, जसवार और दातारपुर के राजाओं का विद्रोह, 1855–56 ई. में संथालों का विद्रोह ये सभी विद्रोह अनेक राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारणों से हुये थे। 1857 के विद्रोह की नींव वास्तव में 1757 ई. के प्लासी के युद्ध में ही रखी जा चुकी थी। मई व जून 1757 ई. के महीने में दिल्ली के हिन्दी अखबारों में ये भविष्यवाणी छापी गई थी कि ठीक प्लासी के युद्ध वाले दिन अर्थात् 23 जून 1857 ई. को भारत में अंग्रेजी शासन का अंत कर दिया जायेगा। इस प्रकार की भविष्यवाणी का जिन व्यक्तियों ने विद्रोह में भाग लिया था उन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणों को यदि बरीकी से खोजा जाये तो अधिकतर इतिहासकारों का मानना है कि लार्ड डलहौजी की हड़प–नीति सबसे ज्यादा उत्तरदायी रही है किंतु लार्ड क्लाइव और वारेन हेंस्टिग्स की कूट–नीतियां भी कम जवाबदेही नहीं है।

सैनिक असंतोष तथा चर्बी वाले कारतूसों को ही 1857 के महान विद्रोह का सबसे मुख्य तथा तात्कालिक कारण बताया किंतु यही एकमात्र कारण नहीं है क्योंकि प्लासी युद्ध के उपरांत जब 29 मार्च 1857 को मंगल पांडे द्वारा अंग्रेज एजुटेण्ट की हत्या की गई तब से ही अंग्रेजी प्रशासन के 100 वर्ष के इतिहास में ही इस विद्रोह के कारण छिपे हुये थे, चर्बी वाले कारतूस व सैनिक विद्रोह तो केवल एक चिंगारी मात्र थी।

अंततः भारत में अंग्रेजों का राज्य विस्तार भारतवासियों के लिये अनेकानेक संकटों, आपदाओं और समस्याओं का जनक बन गया अंग्रेजों की निजी नीति ने भारत में प्रचलित सभी पुरानी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक संस्थाओं का विनाश कर दिया और लोगों के जीवन निर्वाह के सारे साधन टूटने एवं बिखरने लगे, असंतोष की व्यापकता, शोषण नीति के कारण ही भारत के विभिन्न राजाओं, महाराजाओं और नवाबों, सैनिकों के हृदय में कंपनी शासन के विरूद्ध विद्रोह करने की भावना ने और अधिक क्रूर रूप धारण कर लिया था एवं कुछ समय पश्चात् समस्त वर्गों ने एकजुट होकर विद्रोह कर दिया ।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार सुंदरलाल ने अंग्रेजों द्वारा किये गये दुर्व्यवहार की अनेक मिसालें प्रस्तुत की हैं किंतु कुछ महत्वपूर्ण कारणों को जानने के पश्चात् हम 1857 ई. के विद्रोह को अच्छी तरह समझ सकते है। इस विद्रोह के कारण अधोलिखित है।

14.3.1 राजनैतिक कारण–

I. लार्ड डलहौजी की हड़प नीति–

भारतीय राजाओं, महाराजाओं को अंग्रेजों की साम्राज्य विस्तार की नीति से खतरा स्पष्ट दिखाई देने लगा था क्योंकि अंग्रेजों द्वारा किये गये कुछ घृणित कार्यों से भारतीयों का भय और अधिक बढ़ गया था, उन्हें लगा अंग्रेज उनके राज्यों को धीरे–धीरे समाप्त कर देंगे, भारतीय रियासतों को अपने अधीन करने की अभिलाषा ने डलहौजी के काल में आकर विकराल रूप धारण कर लिया था। डलहौजी ने लगभग आठ भारतीय राज्यों को जैसे–सतारा, नागपुर, झांसी, संबलपुर, जेतपुर, तंजौर और कर्नाटक को आदि राज्यों के नैतिक व राजनैतिक आचार की सभी सीमाओं का उल्लंघन कर ''व्यपगत के सिद्धांत'' (Doctrine of lapes) के तहत अंग्रेजी साम्राज्य में विलय तथा अवध को कुशासन के आरोप में अंग्रेजी साम्राजय में शामिल कर लिया।

लार्ड डलहौजी ने देशी रियासतों के निःसंतान राजाओं को भी उत्तराधिकार के लिये दत्तक पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय जनता, शासक वर्ण अंग्रेजों के दुश्मन बन गये अंग्रेजों के प्रति उनके मन में आशंका व अविश्वास उत्पन्न होता चला गया जिसकी परिणति हमें 1857 ई. के विद्रोह में दिखाई देती है जहां अंग्रेजों के विरूद्ध भारतीयों ने खुला विद्रोह कर दिया था। अतः राजाओं का अपनी रियासत के प्रति भय निराधार नहीं थे।

II. दिल्ली सम्राट के साथ दुर्व्यव्यवहार–

अंग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचारों से दिल्ली का सम्राट भी अछूता नहीं रहा, इन्होंने भारतीय मुसलमानों की भावनाओं को भी ठेस पहुँचाया है। जब मुगल सम्राट शाह आलम (1759 से 1806) तक राज्य कर रहे थे तो अंग्रेज भी उनका सम्मान करते थे, दिल्ली के बादशाह का ''फिदवी ए–खास'' (खास नौकर) अंग्रेज गवर्नर जनरल स्वयं को मानते थे, किंतु साम्राज्य विस्तार की नीति ने अंग्रेजों को दिल्ली सम्राट की अवहेलना करने पर मजबूर कर दिया। यहाँ तक कि अंग्रेज दिल्ली

सम्राट के दरबार में हो रही कार्यवाही अर्थात् उत्तराधिकारियों के नियुक्ति में भी हस्तक्षेप व कुचक्र करने लगे दिल्ली सम्राट सहित भारतीय मुसलमान भी अंग्रेजों के इस दुर्व्यवहार से असंतुष्ट हो गये और इनके विरूद्ध भारतीयों के मन में असंतोष बढ़ने लगा।

अंग्रेजी सरकार ने इसके अलावा कुछ और ऐसी शर्तों को भारतीयों के सामने रखा, जिससे की उनके भीतर क्रोध की ज्वाला अंदर ही अंदर धधक रही थी, उन्होंने मुगल बादशाह को उत्तराधिकारी को ''बादशाह'' के स्थान में ''शहजादा'' कहा जायेगा, उसे दिल्ली का लाल किला खाली करना होगा, एवं मासिक खर्च हेतु 1 लाख की जगह 15 हजार रूपये मात्र दिये जायेंगे। इस तरह के अनुचित व अप्रिय कार्यों से दिल्ली में क्रोध की आग भड़क उठी।

III. अवध के कुशासन के आरोप–

अवध में नवाब वाजिद अली शाह का शासन था, इसकी राजधानी लखनऊ थी। ये अंग्रेजों का हमेशा वफादार होने पश्चात् भी डलहौजी ने इसे कुशासन का आरोप थोपकर 1857 में अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया।

सुरेन्द्रनाथ सेन इतिहासकार इस विषय पर लिखते हैं कि ''भारतीयों को भी ये देखकर चिंता हो गई कि दोस्त और दुश्मन–दोनों का ही एक जैसा हाल हुआ। 1856 में जब अवध पर आधिपत्य होने के पश्चात् अंग्रेजों के लिये बचा थोड़ा विश्वास भी जाता रहा।''

इस प्रकार अवध के अंग्रेजी राज्य में मिलते ही मुस्लिम कुलीन वर्ग, सैनिक व सिपाही, कृषक सभी अंग्रेजों के विरूद्ध हो गये एवं अवध भी असंतोष का क्षेत्र बन गया था।

IV. नाना साहब के साथ अत्याचार–

अंग्रेजों द्वारा किये गये घृणित कार्यों में एक कार्य पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब के साथ अत्याचार था अर्थात् बाजीराव की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी नाना धुंधपंत को ब्रिटिश सरकार द्वारा पेंशन देना बंद कर दिया एवं उन्हें विठूर में स्थित जागीर छीनने का नोटिस भी दिया गया। इस कार्य के खिलाफ नाना साहेब ने पूर्व में की गई संधियों की बात सामने रखते हुये अपने प्रतिनिधि अजीमुल्ला खाँ को इंग्लैंड भेजकर ब्रिटिश शासन से अपील की किंतु इससे उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

इतिहासकार सुंदरलाल ने लिखा है कि "सर जान के. चार्ल्स बाल, ट्रेवेलिन और मार्टिन चारों प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार ये मानते हैं कि न्याय नाना के पक्ष में नहीं हुआ था।" जिसके परिणामस्वरूप नाना साहेब के हृदय में अंग्रेजों के प्रति नफरत बढ़ती चली गई और 1857 के आते ही वे भी विद्रोही गतिविधियों में शामिल हो गये।

V. क्रीमिया तथा अफगान के साथ युद्ध–

विदेशी देशों से हुये युद्ध जैसे क्रीमिया युद्ध, अफगानिस्तान युद्ध, चीन के विरूद्ध युद्ध आदि में अंग्रेजों की पूर्णत क्षति होती गई। जिससे इनकी अजेयता समाप्त हो गई एवं भारतीयों में प्रेरणादायी विचार ने प्रबलता पकड़ी कि अंग्रेज सैनिक शक्ति में अधिक मजबूत नहीं है इनके खिलाफ आसानी से विद्रोह किया जा सकता। इस प्रकार अंग्रेजों की दोषपूर्ण नीतियां– कृषकों, श्रमिकों, दस्तकारों, राजाओं के अधिकारों इत्यादि के असंतोष का कारण बनी।

इस प्रकार भारतीय राज्यों के ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाये जाने से भारतीय अभिजात्य वर्ग शक्ति व पदवी से तो वंचित हो ही गया साथ ही भारतीयों को हमेशा हेय दृष्टि से देखना, अविश्वास करना एवं ईमानदारी के अयोग्य समझना जाने लगा इसी तरह के कार्यों ने अंग्रेजों के प्रति भारतीय अधिकारी व कर्मचारी वर्ग में असंतोष को भड़काया जिसका परिणाम सन् 1857 ईस्वी का विद्रोह था।

14.3.2 सामाजिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों ने हस्तक्षेप–

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना ने भारत पर वह आधुनिकता थोपने की कोशिश की जिसके लिये हिन्दू व मुस्लिम समाज कभी तैयार नहीं था क्योंकि इन्होंने हिन्दू व मुसलमानों की धार्मिक व सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करने की जो कूटनीति अपनाई उसे भारत की रूढ़िवादी जनता ने कभी भी पसंद नहीं किया। तत्पश्चात् उससे गंभीर उथल–पुथल होना प्रारंभ हो गई।

सती प्रथा, शिशु हत्या, बाल विवाह इत्यादि पर प्रतिबंध लगाना इत्यादि सुधार कार्य थे किंतु इसे परंपरावादी भारतीयों ने अपने सामाजिक मामलों में बाह्य हस्तक्षेप माना जो असहनीय था। भारतीयों का जड़तायुक्त रूढ़िवादिता से भरा जीवन उनके शोषणमूलक उद्देश्यों के कारण समन्वय स्थापित न कर सका। अंग्रेजों का भारतीयों के प्रति अत्यंत कठोर व्यवहार एवं उन्हें हेय दृष्टि से देखना, पग–पग पर भारतीयों को मारना–पीटना, स्त्रियों से अत्याचार व अपमान करना एवं रंग–भेद

की नीति का पालन करना आदि क्रूर कृत्य थे। रेल में प्रथम श्रेणी के डिब्बे में सफर, क्लब, होटल संस्थाओं में बड़े–बड़े पद अर्थात् संभ्रात व सम्मान की वस्तुओं भारतीयों के लिये निषिद्ध हो गई, रेल व तार आदि के प्रचलन को भी भारतीयों ने अपनी संस्कृति पर प्रहार माना, जेलों व छावनियों में सबके लिये एक ही स्थान पर भोजन बनाने को भारतीयों ने अपना धर्म भ्रष्ट का प्रयास समझा, अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से भी भारतीय सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ अतः अंग्रेजों ने भारतीयों के सामाजिक रीति–रिवाजों, परंपराओं को इतना तोड़ा–मरोड़ा कि इनके विरूद्ध प्रतिक्रिया अनिवार्य हो गई। जिससे भारतीयों का अंग्रेजों के प्रति असंतोष बढ़ता गया। जिसका रूप हमें सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह के रूप में दिखाई दिया।

हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था शुरू से ही धर्म पर आधारित रही है और जीवन धार्मिक संस्कारों से नियंत्रित रहा है किंतु अंग्रेजों ने जो भी कुछ नवीन कार्य किया जैसे कि पाश्चात्य शिक्षा प्रसार इसे हिन्दुओं ने धर्म के विरूद्ध ही समझा। 1813 ईस्वी में कंपनी के आदेश पत्र द्वारा ईसाई पादरियों को भारत आने की सुविधा मिली तत्पश्चात् भारत में ईसाईयों की संख्या बढ़ती चली गई उनका एकमात्र लक्ष्य भारत में ईसाई धर्म का जोर–शोर से प्रचार करना था। पादरी लोग भी घूम–घूम कर ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार करने लगे जो भारतीय ईसाई धर्म अपना लेते उन्हें सरकार की ओर से सुविधायें दी जाती थी।

अतः धार्मिक प्रतिकार के रूप में अपना असंतोष अंग्रेजों के विरोध का एक अंग बन गया, सेना में पादरी लेफ्टिनेंट के नाम से जाने, जाने वाले धर्म प्रचारक ईसाई धर्म की प्रशंसा एवं हिन्दू व मुस्लिम धर्मों की निदां करते थे एवं सेना, स्कूल, अस्पताल इत्यादि को धर्म की छावनियां बनाकर किये जाने वाले धार्मिक आक्रमणों ने देश में सांस्कृतिक प्रक्रिया को अनिवार्य बना दिया। ईसाई धर्म प्रचार हेतु आर्थिक सहायता, नियुक्ति, पदोन्नति का प्रलोभन दिया जाने लगा। जिससे धार्मिक विद्वेष को हवा दी गई धार्मिक कटुता की यही चिंगारी धीरे–धीरे बढ़ती गई जिसने आगे जाके दावानल का रूप धारण कर लिया जिसकी परिणति सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह के रूप में हमें देखने को मिलती है।

14.3.3 सांस्कृतिक कारण–

अनेक भारतीय राजा, जमींदार और जागीरदार कला और साहित्य के उदार संरक्षक थे एवं धार्मिक उपदेशकों विद्वान, साधु–संतों और महात्माओं के पोषक भी थे किंतु अंग्रेजों ने भारत में आते

ही धीरे–धीरे इन शासकों आदि को हटाने के प्रयास प्रारंभ किये एवं इनके अधिकारों को समाप्त कर दिया गया तभी से इनका धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक संरक्षण समाप्त हो गया जिसे हिन्दुओं ने सदियों से चली आ रही परंपरा में अंग्रेजों का हस्तक्षेप माना, क्योंकि इनकी आय के साधन भी समाप्त होते जा रहे थे, उन्हें लगा कि ब्रिटिश सरकार उनके व्यक्तिगत मामलों में भी हस्तक्षेप कर रही है जो उन्हें गंवारा नहीं था क्योंकि वे सिर्फ संरक्षण पर ही निर्भर करते थे।

अंततः ब्रिटिश सरकार ने अपने साम्राज्य को बनाने के लिये जो प्रशासनिक व आर्थिक व्यवस्था के लिये जो नीतियां बना रखी थीं, उसके फलस्वरूप भारत का मूल पारंपरिक, सामाजिक एवं भारतीय संस्कृति का ही स्वरूप बदलने लगा जिसे भारतीयों ने अपनी संस्कृति पर हस्तक्षेप समझा जनमानस के मन मस्तिष्क में अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की भावना भड़क गई और सन् 1857 ईस्वी का विद्रोह हो ही गया।

14.3.4 आर्थिक कारण–

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियां भी भारतीय व्यापार और उद्योगों के विरूद्ध थीं। प्लासी के युद्ध के पश्चात् पूरे धन के प्रवाह से तो इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति आ गई किंतु भारतीय उद्योग धंधे नष्ट हो गये। शिल्पकारों दस्तकारों, इत्यादि के बेरोजगार हो जाने तथा अजीविका के साधनों के समाप्त हो जाने के कारण अंग्रेज विरोधी असंतोष उभरा। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में भारत की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई थी। ब्रिटिश साम्राज्य में उच्च पद पर आसीन अधिकारियों व कर्मचारियों ने अशिक्षित और गरीब जनता का अत्यधिक आर्थिक शोषण किया। अकाल पड़ने पर भी कृषकों से मालगुजारी वसूल की जाती, यदि वे देने में सक्षम नहीं होते तो उनकी जमीन जब्त या नीलाम कर दी जाती थी, अतः जमीन न होने पर कृषक भूखे मरने लगे।

भारतीय अंग्रेजों की दूषित कृषि नीतियों, बढ़ते लगान, घटती उपज, कृत्रिम अकाल आदि ने किसानों की व्यवस्थाओं को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। 19 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप वहाँ बड़े–बड़े कारखानों की स्थापना हुई इनमें कच्चे माल की आवश्यकता हेतु इसकी पूर्ति भारत से की गई किंतु माल तैयार होने पर इसे ऊँची कीमतों में भारतीय बाजारों में बेचा जाता था। जिससे भारत की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ा। यहाँ के कुटीर उद्योग बंद होते चले गये। जिससे जनता में लगातार आक्रोश की भावना बढ़ती गई।

14.3.5 समाचार पत्र का प्रकाशन–

1857 ईस्वी के समाचार पत्रों भी इस विद्रोह के होने में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह में सबसे आगे ''पयाम–ए–आजादी'' का नाम लिया जायेगा जो जंग–ए–आजादी का एक तरह से मुख पत्र था। इसके संपादक अजीमुल्ला खाँ और प्रकाशक बहादुर शाह के पौत्र वेदार बख्त थे। इसके अलावा ''देहली उर्दू अखबार'' में भी अंग्रेजों के विरूद्ध और हिन्दुस्तानी रियासतों की घटनाओं पर विम्ब और प्रतीकों के माध्यम से खबरें छापी जाती थी। दिल्ली से प्रकाशित ''सादिक–उल–अखबार'' व इंदौर के ''मालवा अखबार'' एवं ''अखबार ग्वालियर'' ग्वालियर से भी 1857 के विद्रोह एवं विद्रोहियों के बारे में समाचार मिलते हैं। कोलकाता के समाचार ''सुधा वर्षण'' में बहादुर शाह जफर को देश से बाहर निकालने का फरमान छापा था।

इसके अलावा और भी समाचार पत्र सन् 1857 ईस्वी में छपे जिनके सम्पादकों पर भी अंग्रेजों ने अत्याचार किये, किंतु फिर भी जनता को जाग्रत करने में समाचार पत्रों ने उल्लेखनीय भूमिका अदा की।

14.3.6 सैनिक कारण–

अंग्रेजों के विरूद्ध देश में असंतोष की भावना तो बिजली की तरह फैल रही थी किंतु विप्लव के रूप में इसका विस्फोटित होना तब तक असंभव था जब तक भारतीय सेना अंग्रेजों के साथ थी यह वफादार भी थी, भारतीय सेना ने निस्वार्थ अंग्रेजों का सहयोग किया किंतु अनेकानेक कारणों से भारतीय सैनिक अंग्रेजों से असंतुष्ट होते चले गये।

भारतीय सैनिकों को विभिन्न तरह से प्रताड़ित किया जाता था, अधिकारियों एवं उच्च पद पर आसीन अंग्रेजों का हिन्दुओं के साथ व्यवहार अच्छा नहीं था। अंग्रेज जातिभेद को महत्व देते थे मद्रास व मुंबई की सेना में छोटी जाति के सैनिक जबकि बंगाल की सेना में ब्राह्मणों व राजपूतों की अधिकता थी अधिकांश सैनिकों के उच्चवर्गीय, अनपढ़, रूढ़िवादी एवं अंधविश्वासी होने पर नियंत्रण करना कठिन था, अर्थात् जातिवाद व सफल विद्रोहों ने इन्हें अनुशासनहीन व अभिमानी बना दिया था। समुद्र पार भेजना, सेना में हिन्दू सैनिक तिलक नहीं लगा सकते थे, मुस्लिम सैनिकों को दाढ़ी–मूछें, ललाट, साफ करने के लिए विवश करना आदि अत्याचार विद्रोह का कारण बने। देश में बढ़ते ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय सैनिकों की संख्या बढ़ती गई अफगानिस्तान क्रीमिया, पंजाब एवं वर्मा के युद्धों में अंग्रेज सैनिकों भेजे जाने से, अंग्रेज सैनिकों की कमी होती गई अर्थात् देश में

भारतीय सैनिक वितरण में असमानता से इन्हें नियंत्रित करना कठिन हो गया। भारतीय सैनिकों को उच्च पद से वंचित करना। बंदूकें के भार में भी अंतर होना, विदेश जाना, हिन्दुओं में अपने धर्म के विरूद्ध समझा जाता था। 1824 ई. में बैरकपुर विद्रोह, वर्मा जाने से संबंधित था, 1852 ई. में 30 वीं बंगाली सेना ने भी वर्मा जाने से इंकार कर दिया, इस तरह भारतीयों की धार्मिक मान्यताओं पर प्रहार करके उनके साथ हुये अत्याचारों ने असंतोष का रोद्र रूप धारण कर लिया।

1856 ईस्वी में सामान्य सेवा भरती अधिनियम (General Service Enlistment Act) के पास कर देने से बंगाल की सेना में अशांति की लहर उत्पन्न हो गई थी। इस अधिनियम के पारित होने से पहले ही अंग्रेजों को देश से निकलना अत्यंत आवश्यक हो गया था।

14.3.7 तात्कालिक कारणः चर्बी वाले कारतूस–

सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह का तात्कालिक कारण सैनिकों द्वारा 1856 ईस्वी में प्रयोग की जाने वाली नई इनफील्ड राइफल्स थी जिसमें सुअर व गाय की चर्बी लगे कारतूस का उपयोग किया जाता था जिसे भारतीयों द्वारा मुँह से छीलकर प्रयोग करना होता था एवं एक खबर के अनुसार दमदम के एक सिपाही ने इन सैनिकों को बताया कि कारतूसों की ग्रीज में गाय और सुअर की चर्बी वाली बात पूर्णतः सत्य है। जिससे भारतीय सैनिक भड़क उठे। कारतूसों को सैनिकों को देने का अभिप्राय उनका धर्म भ्रष्ट एवं ईसाई बनाकर अपने धर्म में शामिल करना था, इसके अलावा आटे में हड्डियों का चूरा व कुओं के पानी को दूषित किया गया जिससे कोई भी व्यक्ति पवित्र न रहे।

इस प्रकार गाय एवं सुअर की चर्बी से बने कारतूसों ने उस समय भारतीयों के अंदर व्याप्त असंतोष को भड़काने में चिंगारी का कार्य किया। जब सैनिकों को दंड दिया गया, तो यही सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह का तात्कालिक कारण बना।

एक उच्च इतिहास लेखक लिखते हैं कि "जमीन के नीचे–ही–नीचे जो विस्फोटक मसाला अनेक कारणों से बहुत दिनों से तैयार हो रहा था उस पर चर्बी लगे हुये कारतूसों ने केवल दिया सलाई का काम किया।"

14.4 1857 के विद्रोह कार्य योजना एवं स्वरूप :

सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह में घटित घटनाओं का होना कोई आश्चर्यजनक नहीं था बल्कि कई वर्षों से इसकी पृष्ठभूमि तैयार की जा रही थी। ब्रिटिश सरकार जो भारत में सिर्फ व्यापार करने के

उद्देश्य से आई थी धीरे–धीरे सारे भारत को अपना समझकर उसकी सत्ता को हथियाना चाहती थी एवं मालिक बनकर इन अंग्रेजों ने भारत की निर्दोष जनता पर विभिन्न तरह के अत्याचार एवं अनाचार किये जिससे सामान्यजन इस समय तक आते–आते बिल्कुल हताश एवं निराश हो चुके थे। उसे किसी "एक मजबूत संगठन" की आवश्यकता थी इस कार्य को सुचारू रूप से दिशा देने हेतु सर्वप्रथम निम्न वर्ग ने पहल की, इनमें साधुओं फकीरों, मौलवियों आदि ने अंग्रेजों के विरूद्ध योजनायें बनाकर विद्रोह और संघर्ष के लिये गूढ़ प्रयास किये। इस संदर्भ में प्रारंभ में पत्रों का आदान–प्रदान किया, विद्रोह संघर्ष के प्रतीक स्वरूप लाल कमल के फूल और रोटियों को सैनिक, छावनियों, नगरों, कस्बों और गाँवों में सैनिकों एवं स्थानीय लोगों में जागृति हेतु घुमाया। पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब उनके वकील अजीमुल्ला खाँ, सतारा के मराठा शासक के वकील रंगोजी बापू, बिहार के जमींदार कुंअर सिंह, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कानपुर के तात्याटोपे, नाना साहब, दिल्ली के सम्राट बहादुर शाह, उनकी बेगम जीनत महल ने, मेरठ में सैनिकों द्वारा, बनारस व इलाहाबाद में लियाकत अली खाँ, अवध ा या लखनऊ में बेगम हजरत महल द्वारा, फैजाबाद में मौलवी अहमद उल्ला शाह, रोहेलखंड खान बहादुर खान आदि ने गुप्त रूप से अंग्रेजों के विरूद्ध योजनायें बनाई।

कार्य को सुचारू रूप से बढ़ाने हेतु देशी राजाओं को तत्कालीन स्थिति से पत्रों द्वारा अवगत कराया एवं उन्हें अपने देश के प्रति जो अंग्रेज हड़पना चाहते थे, उसे स्वतंत्र कराने के लिये प्रेरित किया गया, जनता, सैनिकों तथा शासकों को भी अंग्रेजों के अनाचारों, क्रूर कृत्यों से किसी न किसी माध्यम से अवगत कराया गया।

सन् 1857 ईस्वी के विद्रोह की घटनायें एकदम से नहीं हुई इसकी ज्वाला वर्षों से जनता के मन में सुलग रही थी प्रकृति का एक गूढ़ सिद्धांत है सृजन में ही विसर्जन के बीज छिपे होते हैं। सन् 1757 में प्लासी विजय के उपरांत अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य का पौधा पहले ही लगा दिया था तबसे ही भारतीयों के मन–मस्तिष्क में उथल–पुथल प्रारंभ हो गई जिसकी परिणति हमें 1857 के विद्रोह में देखने को मिलती है।

14.4.1 विद्रोह का प्रारंभ एवं प्रसार–

सन् 1857 ई. के समय सैनिक छावनियों में सैनिकों द्वारा उनके प्रिय ब्राउन बेस बंदूकें के स्थान पर नई एनफील्ड रायफलों का प्रयोग किया गया जिसे चलाने हेतु चर्बी लगे कारतूसों को मुँह

से छीलना पड़ता था। इस तथ्य की पुष्टि तब हुई जब जनवरी सन् 1857 ई. में एक दिन दमदम छावनी का एक सिपाही लोटे में पानी लेकर आ रहा था खलासी द्वारा उस ब्राह्मण सैनिक से पानी मांगने पर उसने इंकार किया तब उस खलासी सिपाही ने कहा तुम्हारा जाति दंभ जल्द भंग हो जायेगा क्योंकि थोड़े दिन में अंग्रेज जिन कारतूसों का उपयोग करने तुम्हें देंगे उसमें गाय और सुअर की चर्बी मिली होगी जिसे दाँतों से काटना होगा तब सैनिक द्वारा ये बात सभी सैनिकों को बताई गई, चर्बी वाले कारतूस की घटना दमदम कारखाने से बैरकपुर एवं वहाँ से अन्य छावनियों में फैल गई। चर्बी वाले कारतूस की घटना सत्य ही प्रतीत होती है ग्रीस लगे कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी लगी थी, जिसका उपयोग करना हिन्दू एवं मुसलमान दोनों के लिये धर्म विरूद्ध कार्य था, चूंकि हिन्दुओं के लिये गौ माँस निषिद्ध था, तो मुसलमानों के लिये सुअर का माँस और अधिकारी वर्ग अंत तक इस बात का खंडन नहीं कर सके कि ग्रीज में उक्त चर्बियों का दूषित सम्मिश्रण नहीं है।

इस प्रकार सन् 1857 ई. के विद्रोह का प्रारंभ होना राष्ट्रीय प्रयत्न की तह में उतनी ही गहरी योजना तथा उतना ही व्यापक एवं गुप्त संगठन था, इस विशाल योजना का सूत्रपात कानपुर के निकट विठूर में ही हुआ होगा क्योंकि सन् 1856 ई. से ही नाना साहब ने सारे भारत में चारों ओर अपने गुप्त दूत और प्रचारक भेजने शुरू कर दिये थे।

इतिहासकार सन जान लिखते हैं ''महीनों से ही नहीं बल्कि वर्षों से ये लोग सारे देश के ऊपर अपनी साजिशों का जाल फैला ही रहे थे। एक देशी दरबार से दूसरे देशी दरबार तक विशाल भारतीय महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक नाना साहब के दूत पत्र लेकर घूम चुके थे, इन पत्रों में होशियारी के साथ और शायद रहस्यपूर्ण शब्दों में भिन्न–भिन्न धर्मों के नरेशों और सरकारों को सलाह दी गई थी और उन्हें आमंत्रित किया गया था कि आप लोग आगामी युद्ध में भाग लें।''

इस तरह नाना साहब एवं उनके वकील (जिनको इन्होंने इंग्लैंड भेजा था) अजीमुल्ला खाँ ने अपना वेश बदलकर कई प्रदेशों और आसपास के अंग्रेज स्थित इलाकों का बहुत ही बारीकी से दौरा किया एवं तत्कालीन परिस्थिति का आकलन करके विद्रोह की रूपरेखा एवं उसके प्रसार की योजना तैयार की थी।

इनकी इस विशाल राष्ट्रीय योजना को संचालित करने के लिये दिल्ली स्थित लाल किले से अच्छा स्थान शायद कोई उपयुक्त नहीं था। दिल्ली में बहादुरशाह जफर को केन्द्रीय अधिनायक तथा

नाना साहब को उनका मंत्री बनाकर कांति की तारीख 31 मई सन् 1857 ई. तय की गई । क्रांति के प्रतीक के रूप में कमल का फूल एवं चपाती रखे गये जिसका अर्थ सदैव क्रांति के लिये तैयार रहना था। 31 मई सन् 1857 ईस्वी को ठीक 12 बजे रात्रि से सशस्त्र क्रांति प्रारंभ करने की योजना बना ली गई थी, 31 मई को रविवार का दिन था और अंग्रेज सामूहिक रूप से गिरजाघर जाते थे उन पर उस समय आक्रमण करना आसान था एवं दिल्ली सम्राट के झंडे को राष्ट्रीय मानकर स्वीकार किया, ये हरे सुनहरे रंग का था।

विद्रोह की तारीख 31 मई सन् 1857 ई. नियत की गई थी, किंतु 19 वीं पलटन के एक नौजवान सैनिक मंगल पांडे ने अंग्रेज विरोधी भावना से प्रेरित होकर 29 मार्च सन् 1857 ई. को बैरकपुर में अपने एजुटेंट पर गोली दागी एवं उसकी हत्या कर दी गई, मंगल पांडे को पकड़ लिया गया एवं 8 अप्रैल सन् 1857 ई. को सैनिक अदालत के फैसले में इन्हें फांसी दे दी गई।

इस प्रकार मंगल पांडे ने जो बलिदान दिया उसे भूलना आसान नहीं था। इनकी फांसी की बात आग की तरह छावनी दर छावनी फैलती चली गई एवं इनके सैनिकों में विद्रोह की ज्वाला धधक उठी वे बदला लेने के लिये तत्पर हो गये अब उन्हें तारीख भी याद नहीं रही एवं 9 मई की रात सैनिकों ने दिल्ली के नेताओं को सूचित कर दिया कि हम लोग कल तक (10 मई) दिल्ली पहुँच जायेंगे आप लोग विद्रोह के लिये तैयार रहें। अपने सैनिक साथियों का सार्वजनिक अपमान, तिरस्कार एवं कठोर दंड से अन्य भारतीय सैनिक भी क्रोधित हो गये, 10 मई सन् 1857 ईस्वी को मेरठ के सैनिकों ने विद्रोह का शंखनाद कर दिया क्योंकि यहाँ पर 85 सैनिकों ने चर्बी लगे कारतूस लेने से इंकार कर दिया था, उन्हें 10 वर्ष का कारावास हो गया था, विद्रोह के पश्चात् अंग्रेजी अफसरों को मारा गया, कैदियों का स्वतंत्र कराया गया और वे सामूहिक रूप से दिल्ली की ओर चल पड़े।

विद्रोह का आरंभ 10 मई सन् 1857 ईस्वी को दिल्ली 36 मील दूर मेरठ में हुआ, यद्यपि मेरठ में 2200 सैनिक थे किंतु इन विद्रोहियों का पीछा नहीं किया गया क्योंकि इसमें वे सैनिक शामिल थे जिन्होंने बाजार में लूटमार की तथा अंग्रेज अफसरों के बांग्लों को जलाकर तहस–नहस कर दिया पुलिस ने भी अंग्रेजों का साथ नहीं दिया। 10 मई की रात ही सैनिक मेरठ से दिल्ली की ओर रवाना हो गये। विद्रोह इतनी तेजी बढ़ता गया और पूरे उत्तर भारत में फैल गया और जल्द ही उत्तर में पंजाब से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक तथा पूर्व में बिहार से लेकर पश्चिम में राजस्थान तक का विशाल भू–भाग इस विद्रोह से नहीं बच पाया।

इस संदर्भ में सावरकर जी अपने विचार व्यक्त करते हुये हमें लिखा कि "दो हजार क्रांतिदूत सैनिक, तारों को काटते हुये अत्याचारी अंग्रेजों के खून से धरती की प्यास बुझाते हुये..... "चलो दिल्ली, दिल्ली चलो" के जयघोष करते हुये हिन्दुस्तान की राजधानी की ओर द्रुतगति से बढ़ते जा रहे थे।

14.4.2 विद्रोह के क्षेत्र–

I. दिल्ली–

मेरठ से निकले लगभग 2 हजार सशस्त्र हिन्दुस्तानी 11 मई सन् 1857 ई. को दिल्ली पहुँच गये। दिल्ली में इसकी सूचना मिलते ही 52 वीं पल्टन के कर्नल रिप्ले सक्रिय हो गये एवं इन विद्रोहियों का सामना करने के लिये इन्होंने अपनी पलटन को तैयार कर लिया, किंतु कुछ ही देर में ये दिल्ली व मेरठ के सैनिकों की गोली का शिकार हो गये एवं मेरठ के सैनिकों ने नारे लगाये एवं कहा कि "फिरंगियों के राज्य का नाश कर दो" बादशाह की जय हो, "दीन–दीन" "हर–हर महादेव" एवं दिल्ली के सैनिकों कहा "मारो फिरंगी को" की जयघोष की। तत्पश्चात् हिन्दुस्तानी सैनिकों ने दिल्ली के किले पर अपना अधिकार कर लिया एवं सेना के भारतीय अधिकारियों ने सम्राट बहादुर शाह को सलाम करके उन्हें स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व स्वीकार करने का आग्रह किया, उन्हें अपने पक्ष में करके स्वतंत्र भारत का पुनः शासक घोषित किया एवं उनके सम्मान में 21 तोपों की सलामी दी तब दिल्ली के लाल किले पर बहादुर शाह जफर ने अपना स्वतंत्रता का झंडा फहरा दिया एवं एक घोषणा पत्र जारी किया।

दिल्ली के लाल किले के भीतर राजनीतिक गतिविधियाँ चल रही थीं बाहर नगरों में भयंकर मार–काट मचा हुआ था, अंग्रेजों के निवास स्थल, कार्यालय, बैंक, शास्त्रागार, सब आग के हवाले कर दिये सभी अंग्रेज स्त्री–पुरूष तथा बच्चों को मौत के घाट उतारा जा रहा था पूरे देश में विद्रोह की लहर तेजी से फैल चुकी थी।

सवारकर ने इस संदर्भ में लिखा कि "11 मई को दिल्ली में अंग्रेजों का जो नरमेघ आरंभ हुआ था उसकी पूर्णाहूति 16 मई से पड़ी। इस पाँच दिन की अवधि में ही भारत में एक शताब्दी से बद्धमूल हुये दासता के विषवृक्ष को समूल उखाड़कर फेंक दिया था।"

इस प्रकार मेरठ और दिल्ली के आसपास ग्रामीण क्षेत्रों में विरोध होने लगे क्योंकि रिहा किये गये कैदियों, सिपाहियों व यात्रियों के माध्यम से मेरठ की खबरें बड़ी तीव्र गति से फैल गई। दिल्ली के निकट हिंडन व सिकंदराबाद एवं दिल्ली के दक्षिण पश्चिम में स्थित गुड़गांव, पलवल, शोभना, लूह, रेवाड़ी जैसे नगरों में भी विद्रोह एवं लूटमार की घटनायें लगातार घटित हो रही थीं।

इस संदर्भ में एक इतिहासकार एरिक स्टोक्सन लिखते हैं "ये विद्रोही न तो आर्थिक शिकायतों से रहित थे और न ही राजनीतिक शिकायतों से अनभिज्ञ थे।"

दिल्ली मेरठ में घटित घटनाओं का समाचार सारे देश में तीव्र गति से फैल गया था एवं अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की भावना भड़क उठी, दिल्ली आसपास के अलीगढ़, मैनपुरी, इटावा एवं उत्तर प्रांत (बुलंद शहर, बढ़ौत, बरेली, अवध, कानपुर, झांसी, बिहार, बनारस, मध्यप्रदेश) अन्य क्षेत्र भी इस विद्रोह से अछूते न रह सके।

II. अवध व लखनऊ–

बेगम हजरत महल, अवध के अपदस्थ नवाब वाजिद अली शह की पत्नी थी। इन्होंने सन् 1857 ई. के विद्रोह में लखनऊ में झंडा फहराया। चूंकि अंग्रेज सन् 1857 ई. की जनक्रांति से पूर्व ही अवध को हड़पना चाहते थे। अवध की राजधानी लखनऊ में असंतोष व्याप्त सैनिकों ने 30 मई की रात में 9 बजे विद्रोह कर दिया, विद्रोहियों ने अवध में भी अंग्रेजों के बंगलों पर प्रहार किया, लखनऊ के विद्रोहियों ने अंग्रेजों पर हमला हेतु चिनहट नामक स्थान पर चढ़ाई की ब्रिटिश रेजीडेंट हेनरी लारेंस ने जब विप्लवकारियों पर हमला किया किंतु इनकी सेना भी विद्रोही सिपाहियों से मिल गई, युद्ध उपरांत एवं हेनरी लारेंस की मृत्यु हो गई अंग्रेज हार गये। इस प्रकार सन् 1857 ई. सबसे भयंकर युद्ध अवध की भूमि पर लड़े गए। लखनऊ में हुये विद्रोह के पश्चात् शीघ्र ही सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, सुल्तानपुर इत्यादि में भी विद्रोह का विगुल बज गया।

इस प्रकार 31 मई से 10 जून के बीच लगभग अधिकांश अवध राज्य अंग्रेजों के चंगुल से निकल गया था।

III. कानपुर–

4 जून सन् 1857 ई. को कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व नाना साहब ने किया एवं कानपुर अंग्रेजों के हाथों से निकल गया। इस समय अंग्रेजों के सेनापति सर ह्यू ब्लीहर यहाँ पदस्थ थे नाना

साहब की सहायता हेतु अजीमुल्ला खाँ, तात्या टोपे थे। नाना साहब ने इस युद्ध संचालन हेतु एक कूटनीति निर्धारित की थी और ऊपरी तौर पर वह अंग्रेजों के मित्र बने रहे। लगभग एक वर्ष की तैयारी के उपरांत 4 जून सन् 1857 ई. की आधी रात को अचानक कानपुर छावनी में 3 फायर हुये। विद्रोह का शंखनाद हो गया था, सिपाहियों ने पूर्व नियोजित योजना के तहत अंग्रेजों की इमारतों में आग लगा दी, झंडों का गिराया, अपने झंडे फहराये एवं 5 जून तक अंग्रेजी खजाना एवं मैंगजीन दोनों ही विद्रोहियों के हाथों में आ गई। किंतु नाना के सिपाही भी विद्रोहियों से आ मिले, भारतीय सिपाहियों एवं नगर निवासियों ने नाना साहब को नेता चुना, इन्होंने अंग्रेजी किले का मोहासरा देने के लिये जनरल व्हीलर को चेतावनी दी किंतु कोई जवाब न मिलने पर तोपों से आक्रमण किया आक्रमण के दौरान कुछ अंग्रेज मारे गये कुछ घायल हुये। ये गोलीबारी 21 दिन तक चलती रही अंत में व्हीलर ने समझौता किया।

कानपुर के विद्रोह में सतीचौरा घाट का हत्याकांड इतिहास से अत्यंत महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इसके किले में कैद अंग्रेजों, स्त्रियों एवं बच्चों को जो बच गये उन्हें नाना साहब ने सुरक्षित इलाहाबाद पहुँचाने का वायदा किया किंतु किले से डेढ़ किलोमीटर दूर सतीचौराघाट पर जब इन सिपाहियों को कश्तियों में बैठाया गया तो इलाहाबाद व उसके आसपास के इलाके से हजारों मनुष्य, बाल–बच्चे, स्त्रियां जो कि कर्नल नील के अत्याचारों से क्रोध की अग्नि में जल रहे थे, वहां एकत्रित हुए। 27 जून सुबह 10 सतीचौराघाट पर एकत्रित भीड़ में से एक व्यक्ति ने कर्नल ईवर्ट पर हमला कर दिया, बस फिर थोड़ी ही देर में मार काट प्रारंभ हो गई, बहुत से अंग्रेजों की मृत्यु हो गई, किंतु नाना साहब को इसका समाचार प्राप्त होते ही उन्होंने कहा स्त्रियों व बच्चों को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाया जाये, जिससे बच्चे व स्त्रियों की जान बच गई चूंकि सतीचौराघाट का हत्याकांड सही नहीं था किंतु यह जनरल नील व उसके सिपाहियों के अत्याचार का ही परिणाम था।

IV. झांसी–

लार्ड डलहौजी ने "व्यपगत के सिद्धांत" द्वारा गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दमोदर राव को नाजायज कहकर झांसी की संपूर्ण संपत्ति व राज्य पर अधिकार कर लिया था। लक्ष्मीबाई को पेंशन दी जाती थी, अपने खोये हुये राज्य की प्राप्ति हेतु 5 जून सन् 1857 ई. के अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। चर्बी लगा कारतूस झांसी में भी चर्चा का विषय था जैसे ही मई में मेरठ व दिल्ली की

खबरें आई, यहाँ पदस्थ कैप्टन डनलप सक्रिय हो गये। विद्रोह के उपरांत सेना के एक पक्ष ने सारे खजाने को लूट लिया। स्कीन व गोर्डन आदि अंग्रेज किले में बंद हो गये, इन्होंने अपनी सुरक्षा के हरसंभव प्रयास किये किंतु सिपाहियों की शर्तानुसार किला खाली नहीं किया गया। झांसी की जोखन बाग का वध वाली घटना अत्यंत दर्दनाक थी। इसमें कई पुरूषों, स्त्रियों एवं बच्चों के पूरे दल को तलवार से उड़ा दिया गया, लाशें जोखनबाग में, जहाँ यह हत्याकांड हुआ था, तीन दिन तक खुली पड़ी थी। इन्हें गड्ढे में दफना दिया था। कुछ स्त्री व बच्चे ही सही सलामत बच पाये थे ।

रानी लक्ष्मीबाई व तात्याटोपे 21 अप्रैल को कालपी पहुँचे किंतु यहाँ पर भी अंग्रेजी सेना ने अधिकार कर लिया, ग्वालियर का राजा अंग्रेजों का समर्थक होने के कारण रानी ने ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया एवं मार्च सन् 1858 ई. में अंग्रेजों से 17 जून सन् 1858 ई. तक झांसी की रानी सैनिक वेशभूषा में लड़ती हुई दुर्ग के पास वीरगति को प्राप्त हुई।

जनरल ह्यूम रोज जिन्होने रानी को पराजित किया, कहा कि "यहाँ वह औरत सोई हुई है जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।"

V. जगदीशपुर (बिहार)–

बिहार के जगदीशपुर में जमींदार कुंवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया जबकि वे 70 साल के हो गये थे किंतु अंग्रेजों ने इन्हें दिवालिया कर दिया एवं इनकी संपत्ति और जायदाद जब्त कर ली, भीतर ही भीतर अंग्रेज इनके शत्रु बन गये थे। चूँकि इन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध कोई योजना नहीं बनाई, किंतु जैसे ही विद्रोही सैनिकों की टुकड़ी वीनापुर से आरा पहुँची कुंअरसिंह ने उनके साथ होकर उनका नेतृत्व किया एवं अंग्रेजी सेना का डटकर मुकाबला किया 6 अप्रैल 1858 को अंग्रेजी सेना को पराजित करके 22 अप्रैल को उन्होंने अपनी जागीर प्रमुख जगदीशपुर अधिकार कर लिया।

अंततः अंग्रेजी राज्य की समाप्ति दिखाई ही दे रही थी किंतु पंजाब व पाटियाला की सिक्ख पल्टनें एवं लखनऊ की गोरखा पलटनें भी यदि विद्रोहियों का एकजुट होकर सहयोग करती तब ये संभव था किंतु इन्होंने सिर्फ अंग्रेजों का साथ दिया, जिससे दिल्ली के सम्राट बहादुरशाह जफर को अंग्रेजों से हार का सामना करना पड़ा, इन्हें बंदी बनाकर जीवन के अंतिम दिनों में रंगून भेज दिया गया, वहाँ झाँसी में वीरांगना लक्ष्मीबाई ने लड़ते–लड़ते अपने प्राणों की आहूति दे दी, नाना साहेब ने कानपुर में युद्ध जारी रखा किंतु गिरफ्तार होने की वजह सन् 1859 ईस्वी में नेपाल चले गये।

जगदीशपुर के कुंअरसिंह की मृत्यु मई सन् 1858 ई. में हो गई थी। तात्या टोपे ने लगभग 11 महीनों तक गुरिल्ला पद्धति से युद्ध जारी रखा किंतु देश में रहने वालों ने गद्दारी का अपना अलग इतिहास रचा एवं अंग्रेजों को तात्याटोपे का पता बताकर गिरफ्तार करवा दिया एवं इस महासमर को अस्थाई विराम लगा दिया।

14.4.3 सन् 1857 ई. के विद्रोह का स्वरूप एवं उसकी व्याख्या–

1857 का विद्रोह आम विद्रोह नहीं था ना ही एक क्षेत्र में होने वाला विद्रोह ही था, बल्कि इस विद्रोह ने राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया था। इस विद्रोह के स्वरूप के विषय में इतिहासकारों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किये।

I. सन् 1857 ई. का विद्रोह सैनिक विद्रोह था–

सरजान लारेंस, सीले, के.मालेसन, ट्रेविलियन, राबर्ट्स होम्स, डाडवेल आदि अंग्रेज इतिहासकारों ने सन् 1857 ई. के विद्रोह को सैनिक विद्रोह माना, इसकी वजह चर्बी वाले कारतूस की घटना थी, जिसके पश्चात् अंग्रेजों ने सैनिकों को शस्त्रहीन कर किया एवं अनेक सैनिक टुकड़ियां भंग कर दी, कई को दंड, फांसी, कुछ को गोलियों एवं तोपों से उड़ाया गया। जिससे भारतीय सैनिक विद्रोह करने पर विवश हो गये क्योंकि इस समय देश में सर्वत्र असंतोष और अराजकता, अव्यवस्था फैली थी। वास्तव में सैनिकों द्वारा विद्रोह बहुत ही प्रबलता के साथ किया गया था।

सीले के अनुसार–''एक पूर्णतया देशभक्ति रहित और स्वार्थी सैनिक विद्रोह या जिसमें न कोई स्थानीय नेतृत्व और न ही सर्वसाधारण का समर्थन प्राप्त था।''

II. सन् 1857 ई. का विद्रोह–जातियों का युद्ध

मेंडले ने कहा कि ये ''जातियों का युद्ध'' था, यह सत्य है कि भारत में श्वेत–अश्वेत को बहुत हेय दृष्टि से देखते थे किंतु हमेशा श्वेत लोगों के साथ 20 काले व्यक्ति रहे हैं। भारतीयों ने हमेशा गोरे सैनिकों की सहायता की है, उन्हें खतरों से बचाया है यह कहना तर्कसंगत होगा कि ये काले विद्रोहियों और काले लोगों द्वारा समर्थित गोरे शासकों के बीच युद्ध था।

III. सन् 1857 ई. का विद्रोह–हिन्दू मुस्लिम षडयंत्र

सर जेम्स आउट्रम और डब्ल्यू टेलर–कुछ अन्य अंग्रेज इतिहासकारों ने इस विद्रोह को अंग्रेजों के विरूद्ध मुसलमानों का षडयंत्र माना है और इसकी पुष्टि तत्कालीन रिपोर्टों और घटनाओं

के आधार पर हो गई। आउट्रम का मत है कि ''यह मुस्लिम षडयंत्र था जिसमें हिन्दू शिकायतों का लाभ उठाया गया।''

''यह विद्रोह स्वरूप मुस्लिम था।'' विद्रोह के संबंध में कैप्टिन पी.जी. स्काट ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

''जनवरी सन् 1857 ई. में एक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ था लिखा हुआ जिसमें लिख हुआ था कि अंग्रेजों ने अपने न्याय के सभी सिद्धांत त्याग दिये और उन्होंने मुसलमानों की जमीन जायदाद को हड़पने के लिये संकल्प किया है इस अतिक्रमण को रोकने के लिये एक ही रास्ता है वह है धर्मयुद्ध''।

IV. सन् 1857 ई. का विद्रोह सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष–

टी.आर. होम्स ने ये माना कि ''1857 का विद्रोह सभ्यता एवं बर्बरता के बीच युद्ध था'' किंतु ये कहना तर्कसंगत न होगा कि इसमें केवल एक ही पक्ष बर्बर था। अत्याचार, हत्या, लूट, क्रूर कृत्य आगजनी के लिये दोनों ही पक्ष उत्तरदायी थे। दिल्ली, कानपुर, लखनऊ में कुछ भारतीय भी यूरोपीय स्त्रियों और बालकों की हत्या के दोषी थे, तो अंग्रेजों ने भी भारतीयों सैनिकों एवं निर्दोष जनता को भी फांसी दी, गोली दागी तथा तोपों से उड़ाया । ये ऐसे अपराध थे जो भारतीयों की अपेक्षा अधिक बर्बर और जघन्य थे। अंग्रेजों द्वारा किये गये ऐसे अपराध वाले जाति के लोग सभ्य कहलाने का दम नहीं भर सकते।

V. सन् 1857 ई. का विद्रोह–राष्ट्रीय विद्रोह था

बेंजामिन डिजरेली ने कहा ये विशाल विद्रोह कोई ''आकस्मिक प्रेरणा नहीं था बल्कि एक सुनियोजित एवं सुसंगठित योजनाओं के परिणामस्वरूप विस्फोटित हुआ था जो सिर्फ एक अवसर की ताक में था अर्थात् किसी भी राज्य का उत्थान एवं पतन, चर्बी वाले कारतूसों की घटना से संभव नहीं होते ऐसे महान विद्रोह तो उचित एवं पर्याप्त कारणों की सोची समझी परिणति हैं। इस कारण इन्होंने इसे ''राष्ट्रीय विद्रोह'' की संज्ञा दी।

VI. सन् 1857 ई. का विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम किंतु राष्ट्रीय नहीं था–

डॉ. सेन ने कहा की सन् 1857 ई. विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम ही था इसे राष्ट्रीय कहना उचित नहीं है क्योंकि जो क्रांतियां होती है वो एक छोटे से वर्ग में संभव होती है जिनमें जनता सम्मिलित होती, नहीं भी होती, अमेरिका की क्रांति व फ्रांसिसी क्रांति में भी यही हुआ।

डॉ. सेन अनुसार "यदि एक विद्रोह में बहुत से लोग सम्मिलित हो जाएं तो उसका स्वरूप राष्ट्रीय हो जाता है।" किंतु इस विद्रोह में बहुत से लोगों ने निष्पक्ष एवं तटस्थता की नीति अपनाई इसलिये इसे राष्ट्रीय कहना उचित नहीं है।

VII. सन् 1857 ई. का विद्रोह न यह प्रथम था न यह राष्ट्रीय था, न स्वतंत्रता संग्राम था–

आर.सी.मजूमदार के अनुसार सन् 1857 ई. का विद्रोह न ही प्रथम था, न राष्ट्रीय न स्वतंत्रता संग्राम था, इसके पहले भी भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध बहुत से विद्रोह हुये ये अवश्य है कि वे इतनी तीव्रता के साथ सारे भारत में नहीं फैल पाये थे, ये पूर्णतः स्वतंत्रता संग्राम नहीं था क्योंकि विद्रोह ने भिन्न–भिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न रूप धारण कर लिया, जिससे प्रतीत होता कि ये केवल सैनिक विद्रोह ही रहा होगा, कुछ असंतुष्ट व्यक्ति ही इसमें शामिल थे, सैनिकों के आचरण में कुछ ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वे अपने देश से में प्रेम करते हैं और उसकी स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजों से लड़ रहे। चूंकि सन् 1857 ई. के विद्रोह के प्रारंभ में स्वरूप कुछ भी रहा हो किंतु यह भारत में अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने के लिये शीघ्र ही चुनौती सिद्ध हुआ, और इसने अप्रत्यक्ष एवं उत्तरकालिक "राष्ट्रीय रूप" धारण कर लिया था।

VIII. सन् 1857 ई. का विद्रोह–समांती विद्रोह था

जवाहर लाल नेहरू के अनुसार सन् 1857 ई. का विद्रोह समांती था क्योकि छोटे रियासतों के राजाओं, जमींदारों, तालुकेदारों को अपनी खोई हुई सत्ता प्राप्त करने का ये अंतिम प्रयास था। ये वर्ग अंग्रेजों के नियंत्रण से मुक्ति, सम्मान, सुविधा और अपनी भूमि चाहते थे, वे अंग्रेजों की प्रशासकीय नीति जो कि कूटनीति में तब्दील होकर उनके हितों को हानि पहुँचा रही थी उससे निजात पाना चाहते थे।

IX. सन् 1857 ई. का विद्रोह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था–

कुछ विद्वान इतिहासकारों ने इस विद्रोह को आजादी की लड़ाई कहा, विनायक दामोदर सावरकर ने अपने ग्रंथ "द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस" एवं शशि भूषण ने अपनी पुस्तक "सिविल रिवेलियन्स इन इंडियन म्यूनिटी" ये प्रमाणित करने की कोशिश की कि सन् 1857 ई. का विद्रोह भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष का प्रथम मुक्ति संग्राम था। स्वाधीनता का युद्ध था और जनता ने इसमें

खुलकर भाग लिया था। वीर सावरकर कहना तर्कसंगत प्रतीत होता है क्योंकि अगर ये सैनिक विद्रोह मात्र होता तो केवल सैनिक शक्ति से ही मुकाबला होता किंतु इसमें एक विशाल जनसमूह जिनमें हिन्दू, मुसलमान तालुकेदार, जमींदार, राजा, नवाब, गरीब किसान, कारीगर, सिपाही, मजदूर तथा छोटी–बड़ी जाति के लोग भेदभाव छोड़कर अंग्रेजों के विरूद्ध लड़े अंततः इस विद्रोह ने "राष्ट्रीय स्वरूप" धारण कर लिया था।

अंततः हम कह सकते हैं कि सन् 1857 ई. के विद्रोह का स्वरूप जो कुछ भी था किंतु इसने अंग्रेजों को समूल जड़ से उखाड़ फेंकने पूरी तैयारी कर ली थी इसका उद्देश्य सिर्फ एक था स्वराज्य को प्राप्त करना चाहे उसके लिये अपने प्राणों की आहुति ही क्यों न देनी पड़े।

परिणामतः सन् 1857 ई. का विद्रोह की घटना आधुनिक भारत की वृहद घटनाओं में से एक है। सन् 1857 ई. का विद्रोह बहुत सी कमियों, विद्रोही सैनिकों और उनके नेताओं ने विद्रोह को संचालित करने के लिये पूर्व से नियोजित योजना, संगठन, आदि का सही ढंग से संचालन नहीं किया। अनेक स्थानों पर विद्रोह स्थानीय बनकर रह गया, अंग्रेजी कूटनीतिज्ञता, साधनों का अभाव, अंग्रेजों का भारतीय सहायता कुछ जगहों पर तिथि से पहले होने के कारण, तो कहीं तिथि की प्रतीक्षा करने पर ये सफल नहीं हो पाया और अंग्रेजों के विरूद्ध सामूहिक एवं संगठित रूप से खड़े होकर विद्रोही, अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध न कर सके अंग्रेजों ने इसे शीघ्र ही दबा दिया। चूंकि सन् 1857 ई. का विद्रोह पूर्णतः सफल तो नहीं हुआ किंतु अपनी मानसिक अभिव्यक्ति के प्रति चिन्हों को ब्रिटिश साम्राज्य के महलों पर चिन्हित कर गया। विस्फोट के ये चिन्ह कलांतर में अंग्रेजों को भयभीत करते रहे। इस संदर्भ में लार्ड क्रोमर ने कहा "काश अंग्रेज की युवा पीढ़ी भारतीय विद्रोह के इतिहास को पढ़े, ध्यान से सीखे और इसका मनन करे, इसमें बहुत से पाठ और चेतावनियां निहित हैं।"

14.5 सारांश :

प्लासी के युद्ध के 100 वर्ष बाद भारतीयों का असंतोष सन् 1857 ई. की क्रांति के रूप में विस्फोटित हुआ। बहुत से इतिहासकार सैनिक असंतोष और चर्बी वाले कारतूस को इस विद्रोह का कारण मानते हैं किंतु वास्तविकता ये है कि इसने तो केवल बारूद के ढेर में आग लगाने का कार्य किया था ये विद्रोह तो बहुत से राजनीतिक तथा प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सैनिक कारणों से विस्फोटित हुआ था। बैरकपुर छावनी के सैनिक मंगल पांडे ने अंग्रेज सैनिक अधिकारी की हत्या कर विद्रोह की शुरूआत की थी। 10 मई को मेरठ में सैनिक विद्रोह, 11 मई

दिल्ली में, अवध में 31 मई, जहाँ बेगम हजरत महल, कानपुर में 4 जून को नाना साहब ने, 5 जून को झांसी में रानी लक्ष्मीबाई बिहार (जगदीशपुर,) कुंअर सिंह ने विद्रोहियों का नेतृत्व संभाला व बड़ी वीरता के साथ अंग्रेजों से युद्ध किया।

सन् 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, असफल हो गया ये भारत का दुर्भाग्य ही था कि इसमें कुछ भारतीयों ने एकता का परिचय नहीं दिया, सिक्ख, राजपूत तथा मराठों ने अंग्रेजों का साथ दिया एवं अंग्रेजों द्वारा इस विद्रोह का बड़ी निर्दयतापूर्वक दमन कर दिया गया किंतु इस क्रांति ने हमारी राष्ट्रीय जीवन शैली जो पुरातन से चली आ रही थी, उसे एक नया मोड़ अवश्य ही दिया था। सन् 1857 ई. की क्रांति इतिहास में युगांतकारी घटना है जिससे एक नवीन युग का आरंभ होता दिखाई दिया अर्थात् भारतीयों में स्वराज्य प्राप्ति की भावना जाग्रत हुई, अंग्रेजों का भारतीयों से विश्वास हट गया उन्होंने सेना में भी अंग्रेजों की संख्या बढ़ा दी, तोपखाने में, अंग्रेज अधिकारी अंग्रेजी शिक्षा अधिक प्रचार–प्रसार करने लगे एवं इस विद्रोह से अंग्रेजों एवं भारतीयों के बीच की खाई और अधिक गहरी हुई, इसमें भाग लेने वालों को विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया गया। इस विद्रोह से अंग्रेजों को अधिक हानि हुई विद्रोह ने राष्ट्रीय आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया। अतः राष्ट्रीय एकता संगठन व आंदोलन का एक नवीन युग प्रारंभ हुआ जिसमें 1885 ने राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, 1920 में असहयोग आंदोलन, 1930 सविनय अवज्ञा आंदोलन, 1942 भारत छोड़ो आंदोलन एवं अंतिम समय में सफलता मिली और अंग्रेज लुटेरों को भारत से 15 अगस्त 1947 को जाना पड़ा, अंततः जिस क्रांति की शुरूआत मंगल पांडे द्वारा हुई उसे गांधीजी ने अंतिम रूप दिया था।

14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. 1857 के विद्रोह के विद्रोह के होने के पीछे वैचारिक पृष्ठभूमि क्या थी, विवेचना कीजिये?
2. 1857 का विद्रोह किन कारणों से हुआ उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन कीजिये?
3. विद्रोह के उन क्षेत्रों का वर्णन कीजिये जहाँ इस विद्रोह ने व्यापक रूप धारण किया था?
4. 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख नेताओं का क्या योगदान रहा, उनका उल्लेख कीजिये?
5. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था उसकी व्याख्या कीजिये ?
6. 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम क्यों कहा जाता है, विवेचना करो ?
7. ''सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष'' 1857 के विद्रोह का स्वरूप था ये किसने कहा, इस तर्क की पुष्टि कीजिये ?
8. सीले, लारेंस ने 1857 के विद्रोह को ''सैनिक विद्रोह'' कहा, ये कहाँ तक तर्कसंगत प्रतीत होता है, इसकीं व्याख्या सहित पुष्टि कीजिये ?